आईआईएमए ने भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति पर रिपोर्ट जारी की - प्रगति दिखी, परंतु चुनौतियाँ अभी भी है

~ आईआईएमए के जेंडर सेंटर द्वारा तैयार और जारी की गई यह रिपोर्ट लैंगिक समानता पर सतत विकास लक्ष्य 5 को प्राप्त करने की दिशा में भारत भर में उप-राष्ट्रीय (जिला) स्तर पर महिलाओं के सामने आ रही चुनौतियों तथा प्रगति के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती है।

20 सितंबर, 2024: भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद (आईआईएमए) के जेंडर सेंटर ने आज लैंगिक समानता पर सतत विकास लक्ष्य 5 (एसडीजी 5) में निर्धारित मापदंडों के अनुसार भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति पर एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें उप-राष्ट्रीय (जिला) स्तर पर भिन्नताओं पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस रिपोर्ट को प्रोफेसर सतीश देवधर, डीन (संकाय) और प्रोफेसर विद्या वेमिरेड्डी, जेंडर सेंटर की अध्यक्ष एवं सह-लेखक द्वारा जारी किया गया।

"उपराष्ट्रीय स्तर पर महिला सशक्तीकरण: लैंगिक समानता हासिल करने की दिशा में (एसडीजी 5)" शीर्षक वाली रिपोर्ट में महिला सशक्तीकरण सूचकांक का परिचय दिया गया है जो पूरे भारत में महिला सशक्तीकरण का विस्तृत, जिला-स्तरीय विश्लेषण प्रदान करता है, जो लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने में मदद करने के लिए नई अंतर्दृष्टि और डेटा प्रदान करता है। यह रिपोर्ट कई विश्वसनीय प्लेटफार्मों और केंद्र द्वारा विकसित महिला सशक्तिकरण सूचकांक से प्राप्त व्यापक डेटाबेस के साथ तैयार की गई है, जो एक स्थानीय उपकरण के रूप में कार्य करता है जिसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा एसडीजी 5 को प्राप्त करने के लिए आवश्यक निम्नलिखित चार प्रमुख क्षेत्रों में जिला स्तर पर सशक्तिकरण के मापन के लिए डिज़ाइन किया गया है: 1) निर्णय लेना, आय पर स्वायत्तता और भौतिक गतिशीलता, 2) आय पर नियंत्रण और आर्थिक सशक्तीकरण, 3) शैक्षिक और सूचनात्मक सशक्तीकरण, और 4) कार्य-जीवन संतुलन।

इस रिपोर्ट में राज्य-व्यापी दृष्टिकोण अपनाने के बजाय जिला-स्तरीय आंकड़ों पर ध्यान केंद्रित करके, विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न समुदायों में महिलाओं के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों का खुलासा किया गया है - शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता तक सीमित पहुंच से लेकर बेहतर कार्य-जीवन संतुलन के लिए संघर्ष तक - जिलों द्वारा अधिक लक्षित हस्तक्षेप करते हुए। इस अध्ययन में राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-4 (एनएफएचएस-4) और एनएफएचएस-5 से देश भर के कुल 705 जिलों की 15 से 49 वर्ष की महिलाओं के आंकड़ों की तुलना और विश्लेषण किया गया, और यह महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भिन्नताओं के साथ एक जटिल परिदृश्य को उजागर करता है। **इस रिपोर्ट के कुछ प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं:**

- 705 जिलों के नमूने में से 67.5% जिलों में महिलाओं को निर्णय लेने और गतिशीलता में सशक्त बताया गया है। निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, खास तौर पर अपने स्वास्थ्य, घर की खरीद-फरोख्त और अपने पति की आय को कैसे खर्च किया जाए, इस मामले में। अकेले या अपने साथी के साथ मिलकर निर्णय लेने वाली महिलाओं का प्रतिशत बढ़ा है।
- जिन महिलाओं के पास अकेले या अपने साथी के साथ संयुक्त रूप से अपनी संपत्ति (भूमि या घर) का स्वामित्व है, उनका प्रतिशत भी एनएफएचएस-4 में 29.09% से बढ़कर एनएफएचएस-5 में 35.00% हो गया है।
- यद्यपि महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है, लेकिन केवल 46.1% जिलों में शैक्षिक सशक्तिकरण की सूचना दी गई है, और केवल 32.25% जिलों में महिला उत्तरदाताओं ने महसूस किया कि वे कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने में सक्षम थीं, जो अवैतनिक घरेलू काम से जुड़ी चुनौतियों को उजागर करता है।
- **उच्च शिक्षा**: उच्च शिक्षा पूरी करने वाली महिलाओं की औसत संख्या एनएफएचएस 4 में प्रति 100 महिलाओं पर 11.43 से बढ़कर एनएफएचएस 5 में प्रति 100 महिलाओं पर 14.42 हो गई है। लेकिन प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में ज्यादा महत्वपूर्ण अंतर नहीं दिखा।
- इसके अलावा, मास मीडिया में रुचि भी एनएफएचएस-4 में 69.12% से बढ़कर एनएफएचएस-5 में 76.24% हो गई है, जिसमें अधिक महिलाएं विभिन्न प्रकार के

मीडिया से जुड़ रही हैं, जो मास मीडिया (रेडियो सुनना, टेलीविजन देखना और समाचार पत्र पढ़ना) के प्रति अधिक जागरूकता का संकेत है।

रिपोर्ट लॉन्च के दौरान बोलते हुए, आईआईएमए के डीन (संकाय) प्रोफेसर सतीश देवधर ने दोनों लिंगों के लिए कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने के लिए घरेलू जिम्मेदारियों को साझा करने में पुरुषों की भागीदारी की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, "रिपोर्ट में अध्ययन किए गए चार मापदंडों में से, कार्य-जीवन संतुलन पैरामीटर सबसे कम प्रगति दर्शाता है। केवल 32% महिलाओं ने बताया कि वे कार्य-जीवन संतुलन का प्रबंधन कर सकती हैं। मेरी राय में, महिलाओं की कार्यबल भागीदारी पुरुषों द्वारा घरेलू कार्य भागीदारी से जटिल रूप से जुड़ी हुई है। चूंकि पुरुषों ने घरेलू जिम्मेदारियों में अपनी समान हिस्सेदारी सक्रिय रूप से नहीं ली है, यह अंततः महिलाओं की श्रम-शक्ति भागीदारी की गुणवत्ता में बाधा डाल रहा है। आईआईएमए में जेंडर सेंटर की यह रिपोर्ट न केवल प्रगति के उपाय के रूप में बल्कि कार्यबल में महिलाओं के सशक्तीकरण और भागीदारी को बढ़ाने के लिए भविष्य के हस्तक्षेपों के लिए एक रोडमैप के रूप में भी काम करती है।"

महिला सशक्तिकरण सूचकांक और आईआईएमए में जेंडर सेंटर की यह रिपोर्ट न केवल प्रगति के माप के रूप में कार्य करती है, बल्कि भविष्य के हस्तक्षेपों के लिए एक रोडमैप के रूप में भी कार्य करती है। अब जिलों पर ध्यान केंद्रित करके, हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि महिला सशक्तिकरण और कार्यबल में भागीदारी बढ़ाने के लिए नीति निर्माण का समर्थन करने के लिए कहाँ बदलाव की सबसे अधिक आवश्यकता है।"

जेंडर सेंटर की अध्यक्ष और रिपोर्ट की सह-लेखिका प्रोफेसर विद्या वेमिरेड्डी ने इस पहल के महत्व पर जोर दिया और कहा, "आईआईएमए में जेंडर सेंटर में हमारी पहल एक अनुकरणीय कार्यप्रणाली प्रदान करना है जो कई हितधारकों को महिला सशक्तीकरण और एसडीजी 5 संकेतकों में प्रगति और सुधार के भावि क्षेत्रों की पहचान करने और उन्हें ट्रैक करने के लिए स्थानीयकृत जिला-स्तरीय अंतर्दृष्टि उत्पन्न करने में मदद करेगी। इस प्रयास का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर लैंगिक समानता की निगरानी करने और एसडीजी 5 (लैंगिक समानता) लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए डेटा-संचालित दृष्टिकोण सुनिश्चित करके मौजूदा नीति और अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करना है।"

रिपोर्ट लॉन्च के बाद 'महिला कार्यबल भागीदारी' विषय पर एक पैनल चर्चा हुई। इन पैनलिस्टों में शामिल थे: सुश्री मेहा पटेल, उपाध्यक्ष, ज़ाइडस फाउंडेशन; डॉ. रंजीता पुस्कुर, प्रधान वैज्ञानिक, लिंग एवं आजीविका, अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान; सुश्री अमृता कुमार, निदेशक, दयाल समूह; और सुश्री रुमझुम चटर्जी, अध्यक्ष, सीआईआई महिला नेतृत्व केंद्र और इंफ्राविजन फाउंडेशन की सह-संस्थापक तथा प्रबंध ट्रस्टी।

कल, जेंडर सेंटर ने "कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की क्षमता का एहसास" विषय पर एक संवाद सत्र भी आयोजित किया, जिसका उद्देश्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि-खाद्य प्रणालियों में ग्रामीण महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों की समझ बनाना और ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए नवीन और परिवर्तनकारी समाधान और अच्छे तरीकों की खोज करना था।

###

About IIM Ahmedabad:

The Indian Institute of Management Ahmedabad (IIMA) is a premier, global management Institute that is at the forefront of promoting excellence in the field of management education. In more than six decades of its existence, the Institute has been acknowledged for its exemplary contributions to scholarship, practice and policy through its distinctive teaching, high-quality research, nurturing future leaders, supporting industry, government, social enterprise and creating a progressive impact on society.

IIMA was founded as an innovative initiative by the Government, industry, and international academia in 1961. Since then, it has been consolidating its global footprint and today it has a network with over 80 top international institutions and a presence in Dubai. Its eminent faculty members and more than 44,000 alumni, who are at the helm of influential positions in all walks of life also contribute to its global recognition. Over the years, IIMA's academically superior, market-driven, and socially impactful programmes, have earned high reputation and acclaim globally. It became the first Indian institution to receive international accreditation from EQUIS. The Institute is also placed first in the Government of India's National Institutional Ranking Framework (NIRF), India Rankings 2024. The Institute has been ranked 43rd globally in the Financial Times (FT) Executive Education Rankings 2024. The renowned flagship two-year Post Graduate Programme in Management (PGP) is ranked 39th in the FT Masters in Management Ranking 2024 and the One-Year MBA (PGPX) has been ranked 41st in the FT Global MBA rankings 2024.

IIMA offers consultancy services and more than 200 curated executive education programmes in customised, blended, and open enrolment formats for a diverse audience comprising business leaders, policymakers, industry professionals, academicians, government officials, armed forces personnel, agri-business and other niche sector specialists and entrepreneurs.

To know more about IIMA, please visit: https://www.iima.ac.in/

For media queries, please contact:
Ms. Shivangi Bhatt | manager-comm@iima.ac.in and pr@iima.ac.in | +91 9979776306